प्रकाशन संख्या : 269

माध्यमिक विद्यालयों में नैतिक शिक्षा के शिक्षण एवं तत्सम्बन्धी अन्य कार्यकलाप की स्थिति का सर्वेक्षण–एक अध्ययन 1987-88

NIEPA DC
D04859

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग

राजकीय केन्द्रीय अध्यापन विज्ञान संस्थान

(राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, उत्तर प्रदेश)

इलाहाबाद

1988

542
370.11
UTT-M

Sub. National Systems Unit,
National Institute of Educational
Planning and Aministration
17-B,SriAurbindo Marg,NewDelhi-110016
DOC. No. 4859
Date 7/9/89

प्राक्कथन

जीवन मूल्यों के प्रति आस्था सदियों से भारतीय संस्कृति की पहचान रही है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के इस युग में इस पहचान को बनाये रखने की आवश्यकता और भी बढ़ गई है। इसी दृष्टि से विद्यालयीय पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा को एक विषय के रूप में सम्मिलित किया गया है। विषय के रूप में उसका अध्ययन-अध्यापन कहाँ तक बच्चों को संस्कारी बनाने में सहायक हुआ है इसका अध्ययन करना इस सर्वेक्षण का उद्देश्य है। आशा है, मूल्यांकन की दृष्टि से प्रस्तुत सर्वेक्षण शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के कुछ नये बिन्दुओं को रेखांकित करने में समर्थ होगा।

गोविन्द बल्लभ पन्त
निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्, उत्तर प्रदेश
लखनऊ।

———

आमुख

भारतीय सदैव से अपनी सभ्यता एवं संस्कृति के लिये संसार में अग्रणी रहे हैं। इस देश की अपनी नैतिक मान्यतायें थीं, किन्तु जहाँ आज देश अपनी बहुमुखी प्रतिभा से चारों ओर दीप्तिमान हो रहा है वहीं यहाँ की नैतिक मान्यताओं का ह्रास हो रहा है। नैतिक मान्यताओं के ह्रास से ही आज सम्पूर्ण राष्ट्र एवं देश में अशांति का वातावरण है। अतएव आज ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो मानव-जीवन में व्याप्त असंतोष एवं कुंठा का निराकरण कर उसे सत्यनिष्ठ एवं सदाचारी बना सके। विद्यालयों में नैतिक शिक्षा का पाठ्यक्रम लागू करने का उद्देश्य निष्ठावान एवं सदाचारी नागरिकों का निर्माण करना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अन्तर्गत नैतिक शिक्षा को अत्यधिक महत्त्व दिया जा रहा है। प्रस्तुत शोध अध्ययन द्वारा विद्यालय के प्रधानाचार्य, अध्यापक छात्र एवं अभिभावकगण के महत्त्वपूर्ण सुझावों को प्राप्त कर यह चेष्टा की गई है कि विद्यालय में नैतिक शिक्षा के अध्ययन-अध्यापन को किस प्रकार प्रभावी बनाया जा सकता है, जिससे छात्रों का नैतिक उत्थान हो सके।

प्रस्तुत शोध अध्ययन का प्रस्तुतीकरण संस्थान की प्रोफेसर श्रीमती कमला सिन्हा के प्रयास से हो सका है। संस्थान के वरिष्ठ शोध अधिकारी श्री राम कृष्ण जायसवाल एवं उप प्राचार्य डॉ० सत्य नारायण प्रसाद जायसवाल के निर्देशन एवं सम्पादन हेतु दिये गये सुझावों, परिवर्तन एवं परिवर्धन सम्बन्धी कृत कार्य के प्रति आभारी हूँ। मुद्रक कार्य में संस्थान के प्रोफेसर डॉ० एस० पी० एन० अवस्थी का सहयोग सराहनीय है।

(डॉ०) राम प्रसाद ध्यानी
प्राचार्य,
राजकीय केन्द्रीय अध्यापन विज्ञान संस्थान,
इलाहाबाद।

अनुक्रमणिका

			पृष्ठ
१.	पृष्ठभूमि	...	१
२.	उद्देश्य	...	२
३.	परिकल्पना	...	२
४.	परिसीमन	...	३
५.	कार्यविधि	...	३
६.	विश्लेषण	...	४
७.	निष्कर्ष	...	२२
८.	सुझाव	...	२३
परिशिष्ट	१. पृच्छा प्रपत्र—प्रधानाचार्यों के लिये	...	२६
	२. पृच्छा प्रपत्र—सहायक अध्यापकों के लिये	...	२९
	३. पृच्छा प्रपत्र—अभिभावकों के लिये	...	३२
	४. पृच्छा प्रपत्र—छात्रों के लिये	...	३४

———

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	३	सत्सम्बन्धी	तत्सम्बन्धी
२१	१०	साम्यता	साम्य
२२	२३	अत्यआवश्यक	अत्यावश्यक
३५	५	संलग्नक	संलग्न

माध्यमिक विद्यालयों में नैतिक शिक्षा के शिक्षण एवं सत्सम्बन्धी अन्य कार्यकलाप की स्थिति का सर्वेक्षण

१. पृष्ठभूमि

समाज को स्वस्थ एवं संतुलित पथ पर अग्रसर करने एवं व्यक्ति को अर्थ, धर्म, काम एवं मोक्ष को उचित रूप से प्राप्त कराने के लिए जिस विधि-निषेध मूलक सामाजिक, व्यावहारिक, आचारिक, धार्मिक तथा राजनीतिक नियमों का विधान देश, काल तथा पात्र के सन्दर्भ में किया जाता है उसे नीति शब्द से अभिहित किया जाता है। "नीति" शब्द 'नी' धातु से बना है। 'नीति' शब्द का अपत्यवाचक रूप 'नैतिक' शब्द है। इस प्रकार नैतिक शब्द का अर्थ हुआ नीति विषयक (नीति का आचरण करने वाला)। नैतिक शिक्षा का अर्थ है नीति अर्थात् सदाचार सिखाने वाली शिक्षा। छात्रों को सदाचारी, संयमी, दयालु, परोपकारी, दृढ़व्रती, कर्त्तव्य-निष्ठ, सहिष्णु एवं स्वावलम्बी बनाने वाली शिक्षा ही नैतिक शिक्षा कहलाती है। सम्प्रति हमारे देश एवं प्रदेश तथा समाज में नैतिकता का बड़ा ह्रास होता जा रहा है।

हमारी शिक्षा पद्धति भी दिशा विहीन हो गयी है। आज का युवक उद्देश्य विहीन होकर किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गया है। उसें न सदाचार का मूल्य मालूम है और न धर्म एवं संस्कृति का ही। फलतः चारों ओर अभाव, अराजकता, संघर्ष और संत्रास का वातावरण है। नैतिक मूल्यों का ह्रास राष्ट्र उत्थान के संदर्भ में चिन्ता का विषय बन गया है। राष्ट्र के सभी शिक्षाशास्त्री एक मत हैं कि समन्वित व्यक्तित्व एवं चरित्र-निर्माण का एक मात्र साधन नैतिक शिक्षा है। अतः विद्यालयों में इसकी शिक्षा निश्चित रूप से दी जानी चाहिये। उत्तर प्रदेश सरकार के शिक्षा विभाग ने इस सम्बन्ध में एक

सराहनीय कदम उठाया और प्रदेश की शिक्षा में उसका शुभारम्भ किया है। वर्तमान दस वर्षीय सामान्य शिक्षा पाठ्यक्रम जो जुलाई १९८२ से लागू है, छात्रों के सर्वांगीण विकास को दृष्टि में रखते हुये छठे विषय के रूप में रक्खा गया है। यद्यपि इस विषय के साथ-साथ समाजोपायोगी उत्पादक कार्य, समाज-सेवा एवं बालचर कार्य की शिक्षा को भी जोड़ा गया है।

हमारी वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा-नीति में भी इसका महत्त्व दर्शाया गया है। नैतिक शिक्षा पर चर्चा, विचार गोष्ठियों का आयोजन करना उसी का परिणाम है। हरिद्वार के "शान्ति कुंज" नामक स्थान पर दो वर्ष से नैतिक शिक्षा प्रशिक्षण हेतु गोष्ठियों का आयोजन हो रहा है। इस प्रशिक्षण में शिक्षा विभाग के बहुत से अधिकारियों एवं प्रधानाचार्यों तथा दीक्षा विद्यालय और प्रशिक्षण महाविद्यालयों के शिक्षक-प्रशिक्षकों ने प्रशिक्षण भी प्राप्त किया हैं। इस प्रकार अब तक जो भी कदम उठाये गये हैं क्या वे सही दिशा में अग्रसर हैं ? यदि हैं तो किस सीमा तक ? यदि नहीं तो हमारे कार्य कलाप में क्या त्रुटि रह गयी है ? इसका निराकरण अथवा समाधान कैसे हो ? इन्हीं प्रश्नों के उत्तर खोजने की दिशा में इस सर्वेक्षण कार्यक्रम का अपना महत्त्व है।

२. सामान्य उद्देश्य

(१) माध्यमिक विद्यालयों में नैतिक शिक्षा के कार्यकलाप का सर्वेक्षण।

(२) उक्त के अपेक्षित स्तर के पठन-पाठन के अभाव के कारकों का पता लगाना।

(३) उक्त विषय के प्रभावी शिक्षण प्रशिक्षण हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

मुख्य उद्देश्य

नैतिक शिक्षा छात्रों को कितना प्रभावित कर सकी है, उसकी जानकारी प्राप्त करना।

३. परिकल्पना

नैतिक शिक्षा बालकों/बालिकाओं के व्यवहारों में परिवर्तन करने में समान रूप से सहायक होगी।

४. परिसीमन

उक्त विषय शोध अध्ययन को इलाहाबाद जनपद के १० माध्यमिक विद्यालयों तक ही सीमित रक्खा जायेगा।

अवधि

आठ माह (जुलाई १९८७ से फरवरी १९८८)।

५. कार्यविधि

(१) प्रतिदर्श का चयन

प्रतिदर्श का चयन 'रैंडम सैंप्लिंग विधि' से किया गया है और इलाहाबाद जनपद के पाँच कन्या विद्यालयों एवं पाँच बालक विद्यालयों के १० प्रधानाचार्य, १० सहायक अध्यापक/अध्यापिकायें एवं १०० छात्र तथा १०० अभिभावक प्रतिदर्श के रूप में प्रयुक्त किये गये हैं।

(२) उपकरण

पृच्छा प्रपत्रों के माध्यम से सर्वेक्षण किया जायगा जो निम्नवत हैं :

१. प्रधानाचार्य पृच्छा प्रपत्र
२. सहायक अध्यापक पृच्छा प्रपत्र
३. अभिभावक पृच्छा प्रपत्र
४. छात्र पृच्छा प्रपत्र

(३) प्रदत्त संग्रह

पृच्छा प्रपत्रों के माध्यम से प्रदत्त संकलन किया गया। प्राप्त पृच्छा प्रपत्रों का विवरण निम्नवत है :

पृच्छा प्रपत्र (प्रधानाचार्यों के) परिशिष्ट १
पृच्छा प्रपत्र २ (सहायक अध्यापक/अध्यापिकाओं के) परिशिष्ट २
पृच्छा प्रपत्र ३ (अभिभावकों के) परिशिष्ट ३
पृच्छा प्रपत्र ४ (छात्र/छात्राओं के) परिशिष्ट ४

विश्लेषण :—

परिशिष्ट—१

पृच्छा प्रपत्र १ पर प्राप्त सूचना के आधार पर

पृच्छा प्रपत्र एक पर तीन प्रधानाचार्यों एवं चार प्रधानाचार्याओं के मत प्राप्त हुये हैं।

तालिका-१

प्रश्न—क्या आप के विद्यालय में नैतिक शिक्षा का शिक्षण कार्य होता है ? (हाँ/नहीं)

पुरुष/महिला प्रधानाचार्य विद्यालय	संख्या	हाँ	नहीं
पुरुष ३	३	√	×
महिला ४	४	√	×

उक्त तालिका से स्पष्ट है कि ३ पुरुष प्रधानाचार्यों और ४ महिला प्रधानाचार्यों ने यह मत व्यक्त किया है कि उनके विद्यालय में नैतिक शिक्षा से सम्बन्धित शिक्षण कार्य होता है। इससे यह प्रतीत होता है कि ७/७ परीक्षित विद्यालयों में नैतिक शिक्षा का कार्य कराया जाता है।

तालिका-२

प्रश्न—नैतिक शिक्षा के अध्ययन हेतु अवधि

विद्यालयों की संख्या	१ घण्टा	२ घण्टा	३ घण्टा	४ घण्टा	अन्य
३	×	×	×	×	२५ मिनट नित्य
२	×	×	√	×	×
१	×	×	×	√	×
१	×	×	×	×	रिक्त घण्टों में

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि तीन विद्यालयों में अध्यापन हेतु प्रतिदिन कुल २५ मिनट का समय दिया जाता है। दो विद्यालयों में सप्ताह में तीन घण्टे का समय और एक विद्यालय में सप्ताह में चार घण्टे का समय दिया जाता है। शेष एक विद्यालय में केवल रिक्त घण्टों में ही उसका शिक्षण कार्य कराया जाता है।

उपर्युक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि विद्यालयों में नैतिक शिक्षा के शिक्षण हेतु अवधि विभिन्न विद्यालयों में भिन्न-भिन्न है। अतः समय सम्बन्धी एक रूपता नहीं है।

तालिका-३

प्रश्न–क्या आपकी दृष्टि में नैतिक शिक्षा का पाठ्यक्रम ठीक है ? (हाँ/नहीं) यदि नहीं तो सुधार हेतु सुझाव।

प्रधानाचार्य	हाँ	नहीं	यदि नहीं तो सुधार हेतु सुझाव
पुरुष ३	२	१	वातावरण के सृजन एवं व्यावहारिक ज्ञान की आवश्यकता।
महिला ४	४	×	×

तालिका ३ से यह स्पष्ट है कि २ पुरुष प्रधानाचार्य और ४ महिला प्रधानाचार्यों के मतानुसार नैतिक शिक्षा का पाठ्यक्रम ठीक है। केवल एक प्रधानाचार्य के अनुसार नैतिक शिक्षा का पाठ्यक्रम ठीक नहीं है। उनके अनुसार नैतिक शिक्षा को पुस्तकों से बाँधना उचित नहीं है, बल्कि इसके लिये वातावरण के सृजन की आवश्यकता है। यदि छात्र के चारों ओर का वातावरण नैतिक होगा तो छात्र स्वतः नैतिक हो जायगा। अतएव अध्यापक, अभिभावक एवं समाज सभी का प्रयास उसके लिये आवश्यक है।

तालिका-४

प्रश्न—क्या नैतिक शिक्षा के अध्ययन से आपको अपने विद्यालय के छात्र/छात्राओं के आचरण एवं व्यवहार में परिवर्तन परिलक्षित होता है ? (हाँ/नहीं)

प्रधानाचार्य	हाँ	नहीं
पुरुष ३	१	२
महिला ४	३	१

तालिका चार से स्पष्ट है कि १ पुरुष और ३ महिला प्रधानाचार्यों के अनुसार हैं अपने विद्यालय के छात्र/छात्राओं में इस विषय के अध्ययन से लाभ हुआ है और के आचरण एवं व्यवहार में पहले से सुधार हुआ है। शेष २ पुरुष एवं १ महिला

प्रधानाचार्या के मत इसके विपरीत हैं और उन्हें इस विषय के अध्ययन के उपरान्त भी अपने विद्यालयों के छात्र/छात्राओं के आचरण एवं व्यवहार में कोई परिवर्तन दृष्टिगत नहीं हुआ है। अतएव इस प्रकार ५७ प्रतिशत मत पक्ष में एवं ४३ प्रतिशत मत विपक्ष में प्राप्त होने से यह स्पष्ट है कि नैतिक शिक्षा का शिक्षण छात्र/छात्राओं के लिए विशेष प्रभावी नहीं हो सका हैं। विशेष कर छात्रों पर इसका प्रभाव अधिक नहीं पड़ा है।

तालिका-५

प्रश्न—क्या आपके विद्यालय में नैतिक शिक्षा से सम्बन्धित अन्य कार्यकलाप भी कराये जाते हैं ? (हाँ/नहीं)

प्रधानाचार्य संख्या	हाँ	नहीं
पुरुष ३	√	×
महिला ४	√	×

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि नैतिक शिक्षा से सम्बन्धित अन्य कार्यकलाप प्रत्येक विद्यालय में किसी न किसी रूप में अवश्य कराये जाते हैं। अतएव शत प्रतिशत प्रधानाचार्यों के मत इसके पक्ष में हैं।

तालिका—६

प्रश्न—नैतिक शिक्षा से सम्बन्धित कौन-कौन से कार्यकलाप आपके विद्यालय में कराये जाते हैं ?

कार्यकलाप का विवरण

विद्यालय संख्या	प्रार्थना स्थल पर नैतिक कथन	हवन	व्यायाम एवं खेलकूद	श्रमदान	कुमारी सभा में नाटक प्रहसन आदि	कार्यानुभव के अन्तर्गत वस्तु निर्माण का कार्य
पुरुष ३	१	×	१	१	×	१
महिला ४	२	१	१	१	३	×

तालिका ६ से यह स्पष्ट है कि प्रत्येक विद्यालय में नैतिक शिक्षा से सम्बन्धित अन्य कार्यकलाप किसी न किसी रूप में अवश्य कराये जाते हैं। उदाहरणार्थ, उपर्युक्त तालिकानुसार १ पुरुष एवं २ महिला विद्यालयों में नित्य प्रार्थना-स्थल पर प्रधानाचार्यों एवं शिक्षकों द्वारा नैतिक कथन का कार्य होता है। बालिका विद्यालय में प्रति सप्ताह नैतिक भावना के अभ्युदय हेतु हवन का आयोजन किया जाता है। शरीर को हृष्ट-पुष्ट रखने हेतु १ पुरुष एवं १ महिला विद्यालय में व्यायाम एवं खेल-कूद का कार्य कराया जाता है। श्रम के महत्व के ज्ञान हेतु १ पुरुष एवं १ बालिका विद्यालय में विद्यालय प्रांगण आदि की स्वच्छता का कार्य कराया जाता है। ३ बालिका विद्यालयों में कुमारी सभा में नैतिकता से परिपूर्ण नाटक, प्रहसन आदि के कार्य कराये जाते हैं। आत्म-निर्भरता की शिक्षा हेतु १ बालक विद्यालय में वस्तु-निर्माण आदि का कार्य कराया जाता है। इस प्रकार प्रधानाचार्यों एवं प्रधानाचार्याओं के मत को अवलोकन करने से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि नैतिक शिक्षा के उन्नयन में अन्य कार्यकलाप का भी बहुत महत्व हैं।

तालिका–७

प्रश्न—आपके विद्यालय में नैतिक शिक्षा का शिक्षण कार्य विद्यालय में कार्यरत सामान्य शिक्षकों द्वारा होता है अथवा इसके लिए विशेष रूप से शिक्षकों की नियुक्ति की गई है ?

विद्यालय	सामान्य शिक्षक	विशिष्ट शिक्षक
पुरुष ३	३	×
महिला ४	४	×

तालिका ७ से स्पष्ट है परीक्षित सातों विद्यालयों में नैतिक शिक्षा का शिक्षण कार्य वहाँ पर कार्यरत सामान्य शिक्षक/शिक्षिकाओं द्वारा ही होता है।

तालिका–८

प्रश्न—नैतिक शिक्षा के शिक्षण एवं मूल्यांकन में सुधार हेतु प्रधानाचार्य/प्रधानाचार्याओं के सुझाव।

	प्रधानाचार्यों की कुल सं० ७	चारों ओर से अभिभावकों का नैतिक होना	परिवेश का नैतिक होना	श्रम के प्रति रुचि	महापुरुषों की जीवन गाथा का ज्ञान कराना	मूल्यांकन विधि में सुधार	प्रार्थना स्थल पर नैतिक कथन	प्रत्येक कक्षा में इस विषय का अध्ययन कराया जाय
पुरुष	३	३	३	४	३	३	१	३
महिला	४	४	४	१	४	४	३	४

उपर्युक्त तालिकानुसार यह स्पष्ट है कि परीक्षित सभी पुरुष एवं महिला विद्यालयों के प्रधानाचार्य/प्रधानाचार्या उससे सहमत हैं कि छात्र/छात्राओं को नैतिक बनाने में उनके चारों ओर के परिवेश का सहयोग आवश्यक होता है। अतएव यह प्रयास आवश्यक है कि उनके चारों ओर का वातावरण नैतिक रहे। विद्यार्थियों का अधिकांश समय माता-पिता के सम्पर्क में व्यतीत होता है। अतएव उनका नैतिक होना आत्यावश्यक है। इसमें सातों विद्यालयों के प्रधानाचार्य/प्रधानाचार्या सहमत हैं। श्रम के महत्व को दर्शाने हेतु उसमें रुचि उत्पन्न करना आवश्यक है। अतएव, बालिका विद्यालय में विद्यालय परिसर आदि की स्वच्छता का कार्य बड़ी रुचि से कराया जाता है। मूल्यांकन विधि में सुधार हेतु सभी सातों प्रधानाचार्यों ने सहमति व्यक्त किया है कि अन्य विषयों की भाँति इस विषय की भी परीक्षा होनी चाहिये और उसके प्राप्तांकों को अन्य विषयों के प्राप्तांकों की भाँति ही परीक्षाफल में जोड़ा जाना चाहिये, तभी इसके अध्ययन एवं अध्यापन में छात्र एवं अध्यापक रुचि लेंगे। विद्यालयी वातावरण को शुद्ध रखने हेतु एवं विद्यार्थियों में नैतिक भावना के अभ्युदय हेतु यह आवश्यक है कि प्रधानाचार्यों एवं शिक्षकों द्वारा प्रार्थना स्थल पर नित्य नैतिकता से परिपूर्ण भाषण एवं नैतिक श्लोकों का श्रवण कराया जाय। यह कार्य उपर्युक्त तालिकानुसार १ बालक विद्यालय एवं २ बालिका विद्यालयों में कराया जाता है। नैतिक शिक्षा को प्रभावी बनाने हेतु यह आवश्यक है कि इस विषय का अध्ययन कार्य प्रत्येक कक्षा में कराया जाय, इससे परीक्षित सभी सातों विद्यालयों के प्रधानाचार्य/प्रधानाचार्या सहमत हैं। इस प्रकार उपर्युक्त सुझावों से यह स्पष्ट है कि नैतिकता के अभ्युदय में अभिभावक, अध्यापक एवं परिवेश का सहयोग आवश्यक है।

परिशिष्ट—२

पृच्छा प्रपत्र २ पर प्राप्त सूचना के आधार पर

पृच्छा प्रपत्र दो पर सात विद्यालयों के पाँच सहायक अध्यापकों एवं पाँच सहायक शिक्षिकाओं के अर्थात् कुल दस मत प्राप्त हुये हैं।

तालिका–९

प्रश्न—क्या आपके विद्यालय में नैतिक शिक्षा का शिक्षण कार्य कराया जाता है ? (हाँ/नहीं)

विद्यालय संख्या		सहायक अध्यापक संख्या	हाँ	नहीं
पुरुष	३	५	√	×
महिला	४	५	√	×

उपर्युक्त तालिकानुसार यह स्पष्ट है कि परीक्षित सातों विद्यालयों के पाँच पुरुष एवं पाँच महिला शिक्षकों के मतानुसार उनके विद्यालयों में नैतिक शिक्षा के शिक्षण का कार्य कराया जाता है। अतएव परीक्षित सातों विद्यालयों में शत प्रतिशत नैतिक शिक्षा के शिक्षण का कार्य कराया जाता है।

तालिका–१०

प्रश्न—क्या आपको नैतिक शिक्षा का अध्यापन कार्य दिया गया है ? (हाँ/नहीं)

विद्यालय सं०		सहायक शिक्षक संख्या	हाँ	नहीं
पुरुष	३	५	√	×
महिला	४	५	√	×

तालिका दस से यहँ स्पष्ट विदित होता है कि परीक्षित ३ पुरुष विद्यालय एवं ४ महिला विद्यालयों के सहायक शिक्षक/शिक्षिका नैतिक शिक्षा का शिक्षण कार्य करती हैं। अतएव इससे यह स्पष्ट है कि परीक्षित सातों विद्यालयों के शिक्षक/शिक्षिकाओं से नैतिक शिक्षा का अध्यापन कार्य कराया जाता है।

तालिका—११

प्रश्न—नैतिक शिक्षा के अध्यापन हेतु प्रति सप्ताह कितने घंटे प्रदान किये गये हैं ?

विद्यालयों की संख्या	१ घंटा	२ घंटा	३ घंटा	अन्य
४	×	×	√	×
२	×	√	×	×
१	√	×	×	×

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट है कि नैतिक शिक्षा के अध्यापन कार्य हेतु चार विद्यालयों में प्रति सप्ताह तीन घंटे का समय प्रदान किया गया है। दो विद्यालयों में प्रति सप्ताह दो घंटे का समय दिया गया है। शेष एक विद्यालय में नित्य १ घंटे का समय इस विषय के अध्यापन हेतु प्रदान किया गया है। अतएव इससे यह स्पष्ट है कि नैतिक शिक्षा का अध्यापन कार्य विद्यालयों में अपनी सुविधानुसार कराया जाता है। इसके लिए समय सम्बन्धी एकरूपता विद्यालयों में नहीं है।

तालिका—१२

प्रश्न—क्या इतना समय आपके मतानुसार नैतिक शिक्षा के अध्यापन हेतु पर्याप्त है ? (हाँ/नहीं)

सहायक शिक्षकों की संख्या		हाँ	नहीं	मत नहीं दिया
पुरुष	५	३	१	१
महिला	५	५	×	×

तालिका-१२ से यह स्पष्ट है कि अध्यापन कार्य हेतु जहाँ तक आवंटित समय का प्रश्न है उससे तीन पुरुष शिक्षक एवं पाँच महिला शिक्षक पूर्ण रूप से संतुष्ट हैं। केवल १ पुरुष शिक्षक के अनुसार आवंटित समय पर्याप्त नहीं है। शेष एक पुरुष शिक्षक ने अपना कोई मत व्यक्त नहीं किया है, अतएव इस प्रकार परीक्षित सात विद्यालयों के ८० प्रतिशत शिक्षकों के मतानुसार इस विषय के अध्यापन कार्य हेतु दिया गया समय पर्याप्त है। अतः यह कहा जा सकता है विद्यालयों में अपनी सुविधानुसार इस विषय के शिक्षण हेतु जो समय निर्धारित किया गया है, वह उपयुक्त है।

तालिका–१३

प्रश्न—क्या आपने नैतिक शिक्षा के अध्यापन हेतु कोई प्रशिक्षण प्राप्त किया है ?

(हाँ/नहीं)

परीक्षित विद्यालयों की संख्या	सहायक शिक्षक संख्या	हाँ	नहीं
पुरुष ३	५	२	३
महिला ४	५	×	५

उपर्युक्त तालिकानुसार परीक्षित ४ महिला विद्यालयों की पाँच शिक्षिकाओं ने नैतिक शिक्षा के शिक्षण हेतु कोई विशेष प्रशिक्षण नहीं प्राप्त किया है। परीक्षित तीन पुरुष विद्यालयों के तीन शिक्षकों ने भी इस विषय के अध्यापन हेतु कोई प्रशिक्षण नहीं प्राप्त किया है। शेष दो पुरुष शिक्षकों में से एक ने स्काउटिंग परीक्षा प्रयोगात्मक के रूप में उच्च प्रशिक्षण प्राप्त किया हैं और दूसरे ने व्यायाम शिक्षा के माध्यम से प्रयोगात्मक रूप में एन० डी०एस० में प्रशिक्षण प्राप्त किया हैं। इस प्रकार उपर्युक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट परिलक्षित होता हैं कि ८० प्रतिशत शिक्षक/शिक्षिकाओं ने इस विषय के अध्यापन हेतु किसी भी प्रकार का प्रशिक्षण नहीं प्राप्त किया है।

तालिका–१४

प्रश्न—क्या नैतिक शिक्षा के अध्ययन में विद्यार्थी रुचि लेते हैं ? (हाँ/नहीं)

सहायक अध्यापक संख्या	हाँ	नहीं
पुरुष ५	३	२
महिला ५	४	१

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि नैतिक शिक्षा के अध्ययन में चार महिला शिक्षिकाओं के मतानुसार उनकी कक्षा की छात्रायें नैतिक शिक्षा के अध्ययन में रुचि लेती हैं। केवल एक शिक्षिका के मतानुसार उनकी कक्षा की छात्रायें इस विषय के अध्ययन में रुचि नहीं लेती हैं। पाँच पुरुष शिक्षकों में से तीन शिक्षकों के अनुसार उनकी कक्षा के छात्र

इस विषय के अध्ययन में रुचि लेते हैं। दो पुरुष शिक्षकों के मतानुसार उनकी कक्षा में छात्रों को इस विषय का अध्ययन रुचिकर नहीं लगता।

इस प्रकार शिक्षक/शिक्षिकाओं के उपर्युक्त मत से यह स्पष्ट विदित होता है कि बालकों की अपेक्षा बालिकायें इस विषय के अध्ययन में अधिक रुचि लेती हैं।

तालिका—१५

प्रश्न—क्या नैतिक शिक्षा से सम्बन्धित किसी अन्य विषय का भी शिक्षण आप विद्यार्थियों को देते हैं? (हाँ/नहीं)

सहायक शिक्षकों की संख्या	हाँ	नहीं
पुरुष ५	३	२
महिला ५	३	२

तालिका १५ से यह स्पष्ट है कि तीन पुरुष एवं तीन महिला शिक्षकगण इस विषय से सम्बन्धित अन्य विषयों का भी अध्यापन-कार्य करते हैं। दो पुरुष एवं दो महिला शिक्षकगण इससे सम्बन्धित अन्य किसी भी विषय का शिक्षण कार्य नहीं करते हैं।

तालिका—१६

प्रश्न—नैतिक शिक्षा के साथ पढ़ाये जाने वाले विषयों के नाम?

विद्यालय संख्या	कुल शिक्षक	अन्य विषय पढ़ाने वाले शिक्षकों की संख्या	पढ़ाये जाने वाले विषयों के नाम: नाग० शास्त्र	सामा० विज्ञान	रेडक्रास एवं गाइ०	स्का०	खेल कूद	पी०टी०	व्या०	योग०
पुरुष ३ महिला ४	पुरुष ५ महिला ५	३	×	१	१	१	१	१	×	×
		३	१	१	१	१	×	×	१	१

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट है कि नैतिक शिक्षा के साथ सहायक शिक्षकों के मतानुसार बालकों के विद्यालयों में नागरिक शास्त्र, सामाजिक विज्ञान, रेडक्रास, स्काउटिंग; खेल-कूद, पी० टी० आदि विषयों का अध्ययन कराया जाता है। सहायक शिक्षिकाओं के मतानुसार बालिकाओं के विद्यालयों में इस विषय के साथ नागरिक शास्त्र, सामाजिक विज्ञान, रेडक्रास, गाइडिंग, व्यायाम, योगासन आदि का अध्ययन कराया जाता है।

इस प्रकार उपर्युक्त विश्लेषण से यह विदित होता है कि बालक एवं बालिका दोनों प्रकार के विद्यालयों में नैतिक शिक्षा के साथ पढ़ाये जाने वाले विषयों में पर्याप्त समानता है।

तालिका—१७

प्रश्न—नैतिक शिक्षा के प्रभावी अध्यापन एवं मूल्यांकन हेतु शिक्षकों के सुझाव ?

सुधार हेतु शिक्षकों के सुझाव

विद्यालय संख्या ७	सहायक शिक्षकों की कुल संख्या	शिक्षक का नैतिक होना	योग्य शिक्षकों की नियुक्ति	वातावरण का नैतिक होना	अभिभावक अध्यापक-का सहयोग	प्रार्थना स्थल पर नैतिक कथन	परीक्षाफल में इस विषय के प्राप्तांकों का जोड़ा जाना
पुरुष	३ ५	५	५	५	५	५	५
महिला	४ ५	५	५	५	५	५	५

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट है कि परीक्षित सातों विद्यालयों के शिक्षक/शिक्षिकाओं ने नैतिक शिक्षा के प्रभावी अध्यापन एवं मूल्यांकन हेतु निम्नांकित सुझाव दिये हैं :

१—शिक्षक/शिक्षिकाओं का स्वयं नैतिक होना।

२—योग्य शिक्षकों द्वारा इस विषय का अध्ययन कार्य कराया जाना।

३—विद्यार्थियों के चारों ओर के वातावरण का नैतिक होना।

४—नैतिक शिक्षा के सफल एवं प्रभावी कार्यान्वयन हेतु शिक्षक एवं अभिभावकों का सहयोग होना।

५—प्रार्थना स्थल पर नित्य शिक्षकों द्वारा नैतिक कथन करना।

६—अन्य विषयों की भाँति ही इस विषय की भी परीक्षा होनी चाहिए और अंक प्रदान किये जाने चाहिए एवं प्राप्तांकों को छात्र/छात्रा के परीक्षाफल में जोड़ा जायें। इससे शिक्षक एवं विद्यार्थी दोनों ही इस विषय का अध्यापन एवं अध्ययन कार्य भली प्रकार एवं रुचिपूर्वक करेंगे। इस प्रकार उपर्युक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि नैतिक शिक्षा के विद्यालयों में सफल एवं प्रभावी अध्यापन एवं मूल्यांकन हेतु शिक्षक/शिक्षिकाओं ने जो मत दिये हैं उनमें एकरूपता हैं।

परिशिष्ट–३

पृच्छा प्रपत्र ३ पर प्राप्त सूचना के आधार पर

पृच्छा प्रपत्र तीन पर कुल ६२ अभिभावकों के मत प्राप्त हुए हैं।

तालिका–१८

प्रश्न—क्या आपकी दृष्टि में नैतिक शिक्षा का समावेश पाठ्यक्रम में होना चाहिए ? (हाँ/नहीं)

अभिभावकों की संख्या	हाँ	नहीं
६२	६०	२

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट है कि ९७ प्रतिशत अभिभावक नैतिक शिक्षा का पाठ्यक्रम में समावेश करने के पक्ष में हैं केवल ३ प्रतिशत अभिभावकों का मत इसके विपक्ष में प्राप्त हुआ है और उनके अनुसार इस विषय का समावेश पाठ्यक्रम में आवश्यक नहीं है। इस प्रकार ९७ प्रतिशत अभिभावकों के मत पक्ष में प्राप्त होने से यह स्पष्ट है कि इस विषय का समावेश छात्रों के नैतिक उत्थान हेतु पाठ्यक्रम में होना चाहिए।

तालिका–१९

प्रश्न—क्या आपका पाल्य नैतिक शिक्षा के अध्ययन में रुचि लेता है ? (हाँ/नहीं)

कुल अभिभावक संख्या	हाँ	नहीं
६२	५२	१०

तालिका १९ के अनुसार ५२ अभिभावकों के मतानुसार उनके बच्चों को इस विषय का अध्ययन रुचिकर लगता है। शेष १० अभिभावकों के मतानुसार उनके बच्चे इस विषय के अध्ययन में रुचि नहीं लेते हैं। इस प्रकार ८४ प्रतिशत अभिभावकों के मतानुसार इस विषय का अध्ययन छात्रों को रुचिकर लगता है। अतएव इस विषय का अध्ययन कार्य विद्यालयों में कराया जा सकता है।

तालिका–२०

प्रश्न—क्या नैतिक शिक्षा के अध्ययन से आपको अपने पाल्य के आचरण एवं व्यवहार में कोई परिवर्तन परिलक्षित होता है ? (हाँ/नहीं)

कुल अभिभावक संख्या	हां	नहीं
६२	५१	११

तालिका—२० के अनुसार ५१ अभिभावकों के मतानुसार इस विषय के अध्ययन से उन्हें अपने पाल्य के आचरण एवं व्यवहार में परिवर्तन दृष्टिगत हुआ है। केवल ११ अभिभावकों के मत के अनुसार उन्हें अपने बच्चों के आचरण एवं व्यवहार में इस विषय के अध्ययन का कोई प्रभाव नहीं दिखलाई पड़ा। इस प्रकार ८२ प्रतिशत अभिभावकों के मत पक्ष में प्राप्त होने के कारण इस विषय का अध्ययन कार्य विद्यार्थियों के लिये लाभदायक होगा। अतएव इसका ज्ञान कराना आवश्यक है।

तालिका–२१

प्रश्न—नैतिक शिक्षा के सफल क्रियान्वयन हेतु अभिभावकों के सुझाव।

	प्रभाव					
अभिभावकों की कुल संख्या	नित्य इस विषय का शिक्षणकार्य होना	पाठ्यक्रम में इस विषय का समावेश करना	व्यावहारिक ज्ञान की आवश्यकता	अभिभावक अध्यापक सहयोग की आवश्यकता	वातावरण का नैतिक होना	इस विषय की परीक्षा अन्य विषयों की भांति हो
६२						
सुझाव हेतु प्राप्त मत	६०	६०	५५	६०	६०	५०

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट है कि ६० अभिभावकों के मत के अनुसार इस विषय का शिक्षण कार्य नित्य विद्यालय में होना आवश्यक है। पाठ्यक्रम में इस विषय के समावेश हेतु ६० अभिभावकों का मत पक्ष में प्राप्त हुआ है। ५५ अभिभावकों के अनुसार विद्यार्थियों को इस विषय के व्यावहारिक ज्ञान की अधिक आवश्यकता है। उनसे इस प्रकार के कार्य कराये जायँ जिससे उनमें स्वयं नैतिक गुणों का आविर्भाव हो। ६० अभिभावकों के मतानुसार इस विषय के प्रभावी एवं सफल बनाने में अभिभावकों एवं अध्यापकों का सहयोग आवश्यक है। अतएव समय-समय पर उनका आपस में मिलना आवश्यक है। ६० अभिभावकों के मत के अनुसार विद्यार्थियों को नैतिक बनाने में वातावरण का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। अतएव विद्यार्थियों के चारों ओर का वातावरण शुद्ध एवं स्वस्थ होना चाहिए। ५० अभिभावकों के अनुसार अन्य विषयों की भाँति इस विषय की परीक्षा भी होनी चाहिए जिससे विद्यार्थी रुचिपूर्वक इस विषय का अध्ययन करें। इस प्रकार अभिभावकों के प्राप्त सुझावों से यह स्पष्ट विदित होता है कि विद्यार्थियों के नैतिक एवं चारित्रिक उन्नयन हेतु यह विषय अत्यन्त लाभकारी है, अतएव इनका ज्ञान उनके लिए आवश्यक है।

परिशिष्ट—४

पृच्छा प्रपत्र ४ पर प्राप्त सूचना के आधार पर

पृच्छा प्रपत्र चार पर कुल ४० छात्राओं के एवं २८ छात्रों के मत प्राप्त हुए हैं। इस प्रकार कुल प्राप्त मतों की संख्या ६८ हुई।

तालिका-२२

प्रश्न— क्या आपको विद्यालय में नैतिक शिक्षा का अध्ययन कराया जाता हैं? (हाँ/नहीं)

कुल विद्यालय संख्या ७	छात्रों की संख्या	हाँ	नहीं
पुरुष ३	२८	√	×
महिला ४	४०	√	×

तालिका-२२ से यह स्पष्ट है कि नैतिक शिक्षा का अध्ययन कार्य बालक एवं बालिका दोनों प्रकार के विद्यालयों में कराया जाता है। अतः इससे यह विदित होता है कि बालक एवं बलिका दोनों के लिए इसका ज्ञान उपयोगी है।

तालिका-२३

प्रश्न—प्रति सप्ताह आपको यह विषय कितने घण्टे विद्यालय में पढ़ाया जाता है ?

छात्र संख्या ६८	एक घण्टा	दो घण्टा	तीन घण्टा	नित्य
३० छात्रायें			√	
१० छात्रायें				√
१० छात्र		√		
१० छात्र				√
८ छात्र			√	

तालिका २३ के अनुसार ३० छात्राओं के मतानुसार उनके विद्यालय में इस विषय का अध्ययन कार्य प्रति सप्ताह तीन घण्टे होता है। १० छात्राओं के अनुसार उन्हें विद्यालय में नित्य इस विषय का अध्ययन कराया जाता है। १० छात्रों के अनुसार उनके विद्यालय में प्रति सप्ताह दो घण्टे इस विषय का अध्यापन कराया जाता है। १० छात्रों के मतानुसार उनको विद्यालय में नित्य इस विषय का अध्ययन कराया जाता है। शेष ८ छात्रों के मत के अनुसार उनके विद्यालय में प्रति सप्ताह तीन घण्टे इस विषय के अध्यापन कार्य हेतु दिये गये हैं। इससे यह स्पष्ट है कि विद्यार्थियों के अध्ययन कार्य हेतु प्रत्येक विद्यालय में समय सम्बन्धी एकरूपता नहीं है। इस विषय का अध्यापन कार्य प्रत्येक विद्यालय अपनी सुविधानुसार करते हैं।

तालिका-२४

प्रश्न—क्या आपको इस विषय का अध्ययन करना रुचिकर लगता है ? (हाँ/नहीं) यदि हाँ तो क्यों ? यदि नहीं तो क्यों ?

छात्र संख्या २८	छात्रा सं० ४०		रुचि का कारण		अरुचि का कारण	
रुचि	अरुचि	रुचि	अरुचि	शिक्षाप्रद एवं ज्ञान-प्रद बातों का ज्ञान	महापुरुषों के जीवन चरित्र का ज्ञान	देश की सभ्यता संस्कृति का ज्ञान	सद् कार्य प्राचीन एवं सद् आचरण	इस विषय की परीक्षा का न होना।
२३	५	३५	५					

तालिका २४ से यह स्पष्ट है कि २३ छात्र एवं ३५ छात्राओं को इस विषय का अध्ययन रुचिकर लगता है। ५ छात्र एवं ५ छात्राओं को इस विषय का अध्ययन रुचिकर नहीं लगता है। इस विषय के अध्ययन में रुचि का कारण छात्र-छात्राओं के मतानुसार निम्नवत हैं :

१. इस विषय के अध्ययन से नैतिक गुणों का उन्नयन करने वाली शिक्षाप्रद एवं ज्ञानप्रद बातों का ज्ञान होता है।

२. महापुरुषों की जीवन-गाथा का ज्ञान होता है।

३. देश की प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति का ज्ञान होता है जो हमारे लिये आदर्श स्वरूप है।

४. इसके अध्ययन से सद् कार्य, सद् आचरण एवं शिष्टाचार का बोध होता है।

अरुचि का कारण :—छात्र/छात्राओं के मतानुसार नैतिक शिक्षा के अध्ययन में अरुचि का मुख्य कारण अन्य विषयों की भाँति इस विषय की परीक्षा का न होना है। परीक्षा न होने के कारण छात्र/छात्राओं को यह विषय अनावश्यक बोझ सा लगता है और परिणामस्वरूप वे इस विषय को लगन एवं रुचि से नहीं पढ़ते हैं।

प्राप्त मतों के अनुसार ८५ प्रतिशत विद्यार्थियों को यह विषय रुचिकर लगता है और १५ प्रतिशत विद्यार्थियों को इस विषय का अध्ययन अरुचिकर लगता है। अतएव बहुमत रुचि के पक्ष में प्राप्त होने से इस विषय का अध्ययन कार्य विद्यार्थियों को कराना हितकर होगा।

तालिका—२५

प्रश्न—आपके विद्यालय में इस विषय के अध्यापन कार्य हेतु विशेष रूप से अध्यापक/अध्यापिकाओं की नियुक्ति की गई है अथवा विद्यालय में कार्यरत सभी अध्यापक/अध्यापिकायें इस विषय का शिक्षण कार्य करते हैं ?

कुल छात्र संख्या ६८	सामान्य शिक्षक	विशिष्ट शिक्षक	मत अप्राप्त
बालक २८	१५	×	१३
बालिका ४०	४०	×	×

तालिका २५ के अनुसार कुल २८ छात्रों में से केवल १५ छात्रों के मत प्राप्त हुए हैं और प्राप्त मतों के अनुसार उनके विद्यालय में नैतिक शिक्षा का शिक्षण कार्य विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों द्वारा ही होता है। इसके लिए अलग से विशेष रूप से शिक्षकों की नियुक्ति नहीं की गई है। शेष १३ छात्रों ने इस सम्बन्ध में अपना कोई मत व्यक्त नहीं किया है। इसी प्रकार ४० छात्राओं में से सभी के मतानुसार उनके विद्यालयों में भी नैतिक शिक्षा का शिक्षण कार्य विद्यालय में कार्यरत सभी शिक्षिकाओं द्वारा कराया जाता है। अलग से इस विषय के शिक्षण हेतु शिक्षिकाओं की नियुक्ति नहीं की गई है। इस प्रकार प्राप्त मतों के अनुसार यह स्पष्ट है कि बालक एवं बालिका दोनों प्रकार के विद्यालयों में नैतिक शिक्षा का शिक्षण विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक/शिक्षिकाओं द्वारा ही कराया जाता है। इसके शिक्षण हेतु अलग से शिक्षक/शिक्षिकाओं की नियुक्ति नहीं की गई है।

तालिका–२६

प्रश्न–नैतिक शिक्षा के अन्तर्गत केवल प्रायोगिक कार्य कराया जाता हैं अथवा लिखित कार्य या दोनों प्रकार के कार्य कराये जाते हैं ?

कुल छात्र संख्या ६८	प्रायोगिक कार्य	लिखित कार्य	दोनों	अन्य
बालक–२८	×	×	२८	×
बालिका–४०	१०	×	३०	×

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट है कि बालकों के विद्यालयों में नैतिक शिक्षा के अन्तर्गत लिखित एवं प्रायोगिक दोनों प्रकार के कार्य कराये जाते हैं। ४० बालिकाओं में से ३० बालिकाओं के मतानुसार उनके विद्यालयों में भी नैतिक शिक्षा के अन्तर्गत लिखित एवं प्रायोगिक दोनों प्रकार के कार्य कराये जाते हैं। शेष १० बालिकाओं के अनुसार उनके विद्यालय में इस विषय के अन्तर्गत केवल प्रायोगिक कार्य ही कराया जाता है। इस प्रकार उपर्युक्त विश्लेषण के अनुसार ८५ प्रतिशत मत लिखित एवं प्रायोगिक दोनों प्रकार के कार्य कराने के पक्ष में प्राप्त हुए हैं। अतएव विद्यालयों में इस विषय के अन्तर्गत दोनों प्रकार के कार्य कराना ही अधिक लाभदायक सिद्ध होगा।

तालिका—२७

प्रश्न—नैतिक शिक्षा के अध्ययन से प्राप्त शिक्षायें। (जो छात्र/छात्राओं ने प्राप्त की हैं ?)

कुल छात्र संख्या ६८	सत्य भाषण	शिक्षाप्रद बातें अहिंसा	सेवाभाव	परोपकार	सदाचार	कर्तव्य पालन	दया	स्वावलंबन आदि
बालक—२८	√	√	√	√	√	√	√	√
बालिका—४०	√	√	√	√	√	√	√	√

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट है कि सम्पूर्ण २८ छात्र एवं ४० बालिकाओं को नैतिक शिक्षा से सत्य भाषण, अहिंसा, सेवाभाव, परोपकार, सदाचार, कर्तव्य पालन, दया, स्वावलम्बन आदि के प्रति आदर की शिक्षायें मिलीं। वास्तव में इन्हीं शिक्षाओं द्वारा ही छात्रों में नैतिकता उत्पन्न होती है। अतः इनका ज्ञान आवश्यक है।

तालिका—२८

प्रश्न—क्या नैतिक शिक्षा के साथ-साथ इससे सम्बन्धित अन्य विषय भी पढ़ाये जाते हैं। (हाँ/नहीं) यदि हाँ तो कौन-कौन से विषय पढ़ाये जाते हैं ?

कुल छात्र संख्या ६८	हाँ	नहीं	मत व्यक्त नहीं किया	पढ़ाये जाने वाले विषयों के नाम सामाजिक विज्ञान	नागरिक शास्त्र	गाइडिंग	पी०टी०
बालक— २८	×	२६	२	×	×	×	×
बालिका—४०	३१	७	२	√	√	√	√

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि २६ छात्रों के मतानुसार उनके विद्यालयों में इससे सम्बन्धित किसी अन्य विषय का अध्ययन कार्य नहीं कराया जाता है। शेष २ छात्रों ने इस सम्बन्ध में अपना कोई मत नहीं व्यक्त किया है। ४० बालिकाओं में से ३१ छात्राओं के अनुसार उनके विद्यालयों में इस विषय के साथ-साथ सामाजिक विज्ञान, नागरिक-शास्त्र, गाइडिंग, पी० टी० आदि विषयों का भी ज्ञान कराया जाता है। ७ छात्राओं के मतानुसार उनके विद्यालयों में इस विषय के साथ-साथ किसी अन्य विषय का अध्ययन कार्य नहीं कराया जाता। शेष २ छात्राओं ने इस विषय पर कोई मत नहीं व्यक्त किया।

तालिका—२९

प्रश्न—किस विधि से नैतिक शिक्षा का अध्ययन, अध्यापन विद्यालय में लाभप्रद हो सकता है, मत प्रकट कीजिए ?

छात्र संख्या ६८	वातावरण	शिक्षक/शिक्षिकाओं का नैतिक होना	प्रार्थनास्थल पर नैतिक कथन	व्यवहारिक ज्ञान	एकता की भावना
बालक २८	√	√	√	√	√
बालिका ४०	√	√	√	√	√

तालिका २९ के अनुसार विद्यालयों में नैतिक शिक्षा को लाभप्रद बनाने हेतु २८ छात्र एवं ४० छात्राओं ने जो मत प्रकट किये हैं, उनमें एकदम साम्यता है। बालक/बालिकाओं द्वारा दिये गये मत निम्नवत हैं :—

१—वातावरण :—

विद्यार्थियों को नैतिक बनाने में वातावरण का अत्यधिक प्रभाव पड़ता हैं। अतएव उनके चारों ओर का वातावरण शुद्ध एवं स्वस्थ होना आवश्यक है।

२ · शिक्षक/शिक्षिकाओं का नैतिक होना :—

विद्यार्थीगण अपने बड़ों का अनुकरण करते हैं। अतएव जिन शिक्षक/शिक्षिकाओं के सम्पर्क में वे आते हैं, उनका नैतिक होना बहुत आवश्यक है। शिक्षक/शिक्षिकाओं को एक आदर्श के रूप में अपने को विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिए जिससे उनके अच्छे आचार-विचार का प्रभाव छात्र/छात्राओं पर पड़ सके।

३—प्रार्थना स्थल पर नैतिक कथन :—

प्रार्थना स्थल पर नित्य शिक्षक/शिक्षिकाओं द्वारा नैतिक कथन विद्यालयी वातावरण एवं विद्यार्थियों के मन को स्वस्थ एवं शुद्ध रखता है, अतएव इस कार्य को नित्य नियम से कराना हितकर है।

४—व्यावहारिक ज्ञान :—

विद्यार्थियों को पुस्तकीय ज्ञान की अपेक्षा नैतिक शिक्षा के सम्बन्ध में व्यावहारिक ज्ञान देना उपयुक्त होगा।

५—एकता की भावना :—

एकता में बहुत बल होता है। अतएव शिक्षक/शिक्षिकाओं का यह कर्त्तव्य है कि वे ऐसे कार्य करायें जिससे विद्यार्थियों में आपस में प्रेम एवं स्नेह की भावना उत्पन्न हो।

६—गुरुजनों का आदर :—

बच्चों में आदर सत्कार की भावना का होना आवश्यक है। विद्यार्थियों में नैतिकता के विकास की प्रथम सीढ़ी है। अतएव परिवार, समाज एवं विद्यालय का वातावरण इस प्रकार का सृजित होना चाहिए जिससे विद्यार्थी नैतिक बन सके और उसमें अपने गुरुजनों के प्रति आदर सत्कार की भावना उत्पन्न हो सके। इस सम्बन्ध में भी सभी छात्रों ने अपनी सहमति प्रकट की। इस प्रकार उपर्युक्त कार्यों के माध्यम से विद्यालयों में नैतिक शिक्षा का अध्ययन, अध्यापन लाभकारी हो सकता है।

निष्कर्ष :—

इस शोध अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष निकलते हैं :—

१—नैतिक शिक्षा का शिक्षण कार्य बालक एवं बालिका दोनों प्रकार के विद्यालयों में होता है।

२—इस विषय के शिक्षण कार्य हेतु निर्धारित समय में प्रत्येक विद्यालय में विभिन्नता है। प्रत्येक विद्यालय में अपनी सुविधानुसार इस विषय का शिक्षण कार्य होता है।

३—विद्यार्थियों के नैतिक उत्थान हेतु इस विषय का समावेश पाठ्यक्रम में होना आवश्यक है।

४—स्वस्थ वातावरण का निर्माण चारित्रिक उत्थान हेतु अति आवश्यक है। वातावरण का निर्माण परिवार, विद्यालय एवं समाज सभी के द्वारा होता है। अतएव इनका सम्मेलन आवश्यक है। इस प्रकार समय-समय पर अध्यापक, अभिभावक सहयोग भी अत्यआवश्यक है।

५—छात्रों की अपेक्षा छात्राओं पर इस विषय के अध्ययन का अधिक प्रभाव परिलक्षित हुआ। छात्राओं को इस विषय का अध्ययन अधिक रुचिकर प्रतीत हुआ।

६—नैतिक शिक्षा का शिक्षण कार्य बालक एवं बालिका दोनों प्रकार के विद्यालयों में वहाँ पर कार्यरत शिक्षकों द्वारा ही कराया जाता है। इसके लिये अलग से शिक्षकों की नियुक्ति नहीं की गई है।

७—नैतिक शिक्षा के शिक्षण हेतु शिक्षक/शिक्षिकाओं ने अलग से कोई प्रशिक्षण नहीं प्राप्त किया है।

८—अन्य विषयों की भाँति इस विषय की भी परीक्षा होनी चाहिए। इस प्रकार शिक्षार्थीगण इस विषय को रुचि एवं लगन से पढ़ेंगे।

९—छात्र/छात्राओं पर शिक्षकों एवं माता-पिता के आचार-विचार का प्रभाव पड़ता है। वे उनका अनुकरण करते हैं। अतएव शिक्षकों एवं अभिभावकों सभी का नैतिक होना आवश्यक है।

१०—नैतिक शिक्षा का ज्ञान पुस्तकीय ज्ञान की अपेक्षा व्यावहारिक रूप से देना अधिक प्रभावी होगा।

११—इस विषय का ज्ञान एक विषय के रूप में न देकर अन्य विषयों से सम्बद्ध करके देना अधिक उपयोगी होगा। इससे पाठ्यक्रम विषय बाहुल्य से बच जायेगा और छात्रों को अन्य विषयों के साथ ही साथ इस विषय का ज्ञान हो जायेगा।

सुझाव :

१—नैतिक शिक्षा के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु यह आवश्यक है कि विद्यालयों में इस विषय का शिक्षण कार्य योग्य, अनुभवी एवं इस विषय में प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा कराया जाय। विद्यालय में कार्यरत शिक्षक कार्याधिक्य के कारण इस विषय के शिक्षण कार्य पर ध्यान नहीं देते हैं।

२—विद्यार्थी की सर्वप्रथम पाठशाला उसका अपना परिवार होता है। अतएव बालक के व्यक्तित्व के विकास एवं नैतिकता की भावना को उत्पन्न करने हेतु यह आवश्यक है कि परिवार के सभी सदस्य नैतिक मूल्यों के महत्व को समझें तथा तदनुसार आचरण करें। परिवार के प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्तव्यों के प्रति सजग एवं जागरूक होना आवश्यक है। उनमें बड़ों के प्रति आदर एवं छोटों के प्रति स्नेह की भावना का होना भी आवश्यक है।

३—धर्म एवं नैतिकता एक दूसरे के पूरक हैं, अतएव विद्यार्थियों के चारित्रिक उत्थान हेतु उनमें धर्म के प्रति आस्था उत्पन्न करना आवश्यक हैं। इस आस्था के कारण वे कोई ऐसे कार्य नहीं करेंगे जिससे समाज में दोष एवं अवरोध उत्पन्न हो।

४—परिवार के पश्चात् बालक विद्यालय में प्रवेश करता है, अतएव विद्यालय के प्रधान एवं सहायक शिक्षक/शिक्षिकाओं का सच्चरित्र एवं कर्तव्यनिष्ठ होना आवश्यक है। उन्हें समदर्शी, सूक्ष्मदर्शी एवं सहनशील होना चाहिए। जहाँ तक संभव हो वे विद्यालय के प्रत्येक छात्र/छात्राओं पर व्यक्तिगत ध्यान देते हुए उनके प्रत्येक कार्यकलाप पर ध्यान दें। इस प्रकार के प्रयत्न एवं प्रयास से विद्यार्थीगण किसी ऐसे कार्य को नहीं करेंगे, जिससे उनका चरित्र दूषित हो।

५—विद्यालय के वातावरण को शुद्ध एवं पवित्र रखने हेतु यह आवश्यक है कि विद्यालय कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व ईश-वन्दना एवं नैतिक प्रवचन कराये जायँ। नैतिक प्रवचन अध्यापक एवं छात्र दोनों के द्वारा कराये जा सकते हैं।

६—विद्यालय की प्रत्येक कक्षा एवं प्रांगण में नैतिकता से ओत-प्रोत श्लोक, दोहे लिखे जायँ तथा महापुरुषों के चित्र लगाये जायँ।

७—विद्यार्थियों के नैतिक मनोबल को सशक्त एवं प्रभावी बनाने हेतु विद्यालय में नित्य पाठ्येतर क्रियाकलाप का आयोजन किया जाना चाहिए। इससे छात्रों में आज्ञाकारिता, कर्तव्य के प्रति निष्ठा, समय का सदुपयोग आदि नैतिक गुणों का विकास होगा।

८—नैतिक शिक्षा यदि शारीरिक शिक्षा, कार्यानुभव तथा समाज-सेवा के माध्यम से दी जाय तो वह अधिक लाभकारी सिद्ध होगी। इससे विद्यार्थी नैतिक शिक्षा के साथ-साथ अन्य उपयोगी विषयों की भी शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे। उदाहरणार्थ, शारीरिक शिक्षा से विद्यार्थी का शरीर स्वस्थ होगा और स्वस्थ शरीर में स्वतः स्वस्थ मन तथा सद्गुणों का आविर्भाव होगा।

९—शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छात्र/छात्राओं को आत्म निर्भर बनाना है। विद्यालयों में इसी दृष्टिकोण के अन्तर्गत आज कार्यानुभव पर विशेष बल दिया जा रहा है। अतएव नैतिक शिक्षा के अन्तर्गत कभी-कभी शिक्षक विद्यार्थियों को साबुन, सर्फ, डलिया, पंखा, दौने, आसन निर्माण आदि का कार्य भी सिखा सकते हैं। ये कार्य भविष्य में छात्र/छात्राओं को स्वावलम्बी बनाने में सहायक हो सकते हैं।

१०—विद्यार्थियों में कर्तव्यपालन एवं सेवा की भावना को उत्पन्न करने की सर्वप्रथम कार्य-स्थली विद्यालय ही है अतएव शिक्षक का यह कर्तव्य है कि वह छात्र को एकता का पाठ पढ़ाये। प्रत्येक शिक्षक को यह ध्यान रखना चाहिए कि प्रत्येक छात्र

कक्षा तथा विद्यालय में एक दूसरे से मिलकर, प्रेमपूर्वक रहे और समय पड़ने पर एक दूसरे की सेवा एवं सहायता भी करे। विद्यालय से प्राप्त ये छोटे-छोटे गुण छात्र को भविष्य में उत्तम श्रेणी का समाज-सेवी बना सकते हैं।

११—नैतिक शिक्षा का मूल्यांकन केवल पुस्तकीय ज्ञान पर करना पर्याप्त नहीं है। इसके लिये छात्र/छात्राओं के आचार-विचार एवं व्यवहार का मूल्यांकन करना भी आवश्यक है। यह कार्य विद्यालय के शिक्षकों के माध्यम से भली प्रकार हो सकता है। विद्यालय में छात्र अनेक शिक्षकों के सम्पर्क में आता है; अतएव जिन शिक्षकों के सम्पर्क में वह आता है उन्हीं के द्वारा उसके कार्य एवं व्यवहार के विषय में जानकारी प्राप्त कर उसकी प्रगति पुस्तिका (Progress Report) में उसका अंकन कर देना उचित होगा। विद्यालय में यह कार्य यदि प्रति माह अथवा प्रति दो माह पर किया जाय तो परिणाम लाभकारी सिद्ध होगा। इस कार्य में शिक्षकों का पूर्ण रूप से सहयोग वांछित होगा जिससे छात्र उनका अनुकरण कर सही मार्ग-दर्शन प्राप्त कर सके।

———

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट है कि ६० अभिभावकों के मत के अनुसार इस विषय का शिक्षण कार्य नित्य विद्यालय में होना आवश्यक है। पाठ्यक्रम में इस विषय के समावेश हेतु ६० अभिभावकों का मत पक्ष में प्राप्त हुआ है। ५५ अभिभावकों के अनुसार विद्यार्थियों को इस विषय के व्यावहारिक ज्ञान की अधिक आवश्यकता है। उनसे इस प्रकार के कार्य कराये जायँ जिससे उनमें स्वयं नैतिक गुणों का आविर्भाव हो। ६० अभिभावकों के मतानुसार इस विषय के प्रभावी एवं सफल बनाने में अभिभावकों एवं अध्यापकों का सहयोग आवश्यक है। अतएव समय-समय पर उनका आपस में मिलना आवश्यक है। ६० अभिभावकों के मत के अनुसार विद्यार्थियों को नैतिक बनाने में वातावरण का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। अतएव विद्यार्थियों के चारों ओर का वातावरण शुद्ध एवं स्वस्थ होना चाहिए। ५० अभिभावकों के अनुसार अन्य विषयों की भाँति इस विषय की परीक्षा भी होनी चाहिए जिससे विद्यार्थी रुचिपूर्वक इस विषय का अध्ययन करें। इस प्रकार अभिभावकों के प्राप्त सुझावों से यह स्पष्ट विदित होता है कि विद्यार्थियों के नैतिक एवं चारित्रिक उन्नयन हेतु यह विषय अत्यन्त लाभकारी है, अतएव इनका ज्ञान उनके लिए आवश्यक है।

परिशिष्ट—४

पृच्छा प्रपत्र ४ पर प्राप्त सूचना के आधार पर

पृच्छा प्रपत्र चार पर कुल ४० छात्राओं के एवं २८ छात्रों के मत प्राप्त हुए हैं। इस प्रकार कुल प्राप्त मतों की संख्या ६८ हुई।

तालिका-२२

प्रश्न— क्या आपको विद्यालय में नैतिक शिक्षा का अध्ययन कराया जाता है? (हाँ/नहीं)

कुल विद्यालय संख्या ७	छात्रों की संख्या	हाँ	नहीं
पुरुष ३	२८	√	×
महिला ४	४०	√	×

तालिका-२२ से यह स्पष्ट है कि नैतिक शिक्षा का अध्ययन कार्य बालक एवं बालिका दोनों प्रकार के विद्यालयों में कराया जाता है। अतः इससे यह विदित होता है कि बालक एवं बलिका दोनों के लिए इसका ज्ञान उपयोगी है।

तालिका-२३

प्रश्न—प्रति सप्ताह आपको यह विषय कितने घण्टे विद्यालय में पढ़ाया जाता है ?

छात्र संख्या ६८	एक घण्टा	दो घण्टा	तीन घण्टा	नित्य
३० छात्रायें			√	
१० छात्रायें				√
१० छात्र		√		
१० छात्र				√
८ छात्र			√	

तालिका २३ के अनुसार ३० छात्राओं के मतानुसार उनके विद्यालय में इस विषय का अध्ययन कार्य प्रति सप्ताह तीन घण्टे होता है। १० छात्राओं के अनुसार उन्हें विद्यालय में नित्य इस विषय का अध्ययन कराया जाता है। १० छात्रों के अनुसार उनके विद्यालय में प्रति सप्ताह दो घण्टे इस विषय का अध्यापन कराया जाता है। १० छात्रों के मतानुसार उनको विद्यालय में नित्य इस विषय का अध्ययन कराया जाता है। शेष ८ छात्रों के मत के अनुसार उनके विद्यालय में प्रति सप्ताह तीन घण्टे इस विषय के अध्यापन कार्य हेतु दिये गये हैं। इससे यह स्पष्ट है कि विद्यार्थियों के अध्ययन कार्य हेतु प्रत्येक विद्यालय में समय सम्बन्धी एकरूपता नहीं है। इस विषय का अध्यापन कार्य प्रत्येक विद्यालय अपनी सुविधानुसार करते हैं।

तालिका-२४

प्रश्न—क्या आपको इस विषय का अध्ययन करना रुचिकर लगता है ? (हाँ/नहीं) यदि हाँ तो क्यों ? यदि नहीं तो क्यों ?

छात्र संख्या २८		छात्रा सं० ४०		रुचि का कारण		अरुचि का कारण	
रुचि	अरुचि	रुचि	अरुचि	शिक्षाप्रद एवं ज्ञान-प्रद बातों का ज्ञान	महापुरुषों के जीवन चरित्र का ज्ञान	देश की प्राचीन सभ्यता संस्कृति का ज्ञान	सद् कार्य एवं सद् आचरण	इस विषय की परीक्षा का न होना।
२३	५	३५	५					

तालिका २४ से यह स्पष्ट है कि २३ छात्र एवं ३५ छात्राओं को इस विषय का अध्ययन रुचिकर लगता है। ५ छात्र एवं ५ छात्राओं को इस विषय का अध्ययन रुचिकर नहीं लगता है। इस विषय के अध्ययन में रुचि का कारण छात्र-छात्राओं के मतानुसार निम्नवत हैं :

१. इस विषय के अध्ययन से नैतिक गुणों का उन्नयन करने वाली शिक्षाप्रद एवं ज्ञानप्रद बातों का ज्ञान होता है।

२. महापुरुषों की जीवन-गाथा का ज्ञान होता है।

३. देश की प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति का ज्ञान होता है जो हमारे लिये आदर्श स्वरूप है।

४. इसके अध्ययन से सद् कार्य, सद् आचरण एवं शिष्टाचार का बोध होता है।

अरुचि का कारण :—छात्र/छात्राओं के मतानुसार नैतिक शिक्षा के अध्ययन में अरुचि का मुख्य कारण अन्य विषयों की भाँति इस विषय की परीक्षा का न होना है। परीक्षा न होने के कारण छात्र/छात्राओं को यह विषय अनावश्यक बोझ सा लगता है और परिणामस्वरूप वे इस विषय को लगन एवं रुचि से नहीं पढ़ते हैं।

प्राप्त मतों के अनुसार ८५ प्रतिशत विद्यार्थियों को यह विषय रुचिकर लगता है और १५ प्रतिशत विद्यार्थियों को इस विषय का अध्ययन अरुचिकर लगता है। अतएव बहुमत रुचि के पक्ष में प्राप्त होने से इस विषय का अध्ययन कार्य विद्यार्थियों को कराना हितकर होगा।

तालिका—२५

प्रश्न—आपके विद्यालय में इस विषय के अध्यापन कार्य हेतु विशेष रूप से अध्यापक/अध्यापिकाओं की नियुक्ति की गई है अथवा विद्यालय में कार्यरत सभी अध्यापक/अध्यापिकायें इस विषय का शिक्षण कार्य करते हैं ?

कुल छात्र संख्या ६८	सामान्य शिक्षक	विशिष्ट शिक्षक	मत अप्राप्त
बालक २८	१५	×	१३
बालिका ४०	४०	×	×

तालिका २५ के अनुसार कुल २८ छात्रों में से केवल १५ छात्रों के मत प्राप्त हुए हैं और प्राप्त मतों के अनुसार उनके विद्यालय में नैतिक शिक्षा का शिक्षण कार्य विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों द्वारा ही होता है। इसके लिए अलग से विशेष रूप से शिक्षकों की नियुक्ति नहीं की गई है। शेष १३ छात्रों ने इस सम्बन्ध में अपना कोई मत व्यक्त नहीं किया है। इसी प्रकार ४० छात्राओं में से सभी के मतानुसार उनके विद्यालयों में भी नैतिक शिक्षा का शिक्षण कार्य विद्यालय में कार्यरत सभी शिक्षिकाओं द्वारा कराया जाता है। अलग से इस विषय के शिक्षण हेतु शिक्षिकाओं की नियुक्ति नहीं की गई है। इस प्रकार प्राप्त मतों के अनुसार यह स्पष्ट है कि बालक एवं बालिका दोनों प्रकार के विद्यालयों में नैतिक शिक्षा का शिक्षण विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक/शिक्षिकाओं द्वारा ही कराया जाता है। इसके शिक्षण हेतु अलग से शिक्षक/शिक्षिकाओं की नियुक्ति नहीं की गई है।

तालिका–२६

प्रश्न–नैतिक शिक्षा के अन्तर्गत केवल प्रायोगिक कार्य कराया जाता हैं अथवा लिखित कार्य या दोनों प्रकार के कार्य कराये जाते हैं ?

	कुल छात्र संख्या ६८	प्रायोगिक कार्य	लिखित कार्य	दोनों	अन्य
बालक–२८		×	×	२८	×
बालिका–४०		१०	×	३०	×

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट है कि बालकों के विद्यालयों में नैतिक शिक्षा के अन्तर्गत लिखित एवं प्रायोगिक दोनों प्रकार के कार्य कराये जाते हैं। ४० बालिकाओं में से ३० बालिकाओं के मतानुसार उनके विद्यालयों में भी नैतिक शिक्षा के अन्तर्गत लिखित एवं प्रायोगिक दोनों प्रकार के कार्य कराये जाते हैं। शेष १० बालिकाओं के अनुसार उनके विद्यालय में इस विषय के अन्तर्गत केवल प्रायोगिक कार्य ही कराया जाता है। इस प्रकार उपर्युक्त विश्लेषण के अनुसार ८५ प्रतिशत मत लिखित एवं प्रायोगिक दोनों प्रकार के कार्य कराने के पक्ष में प्राप्त हुए हैं। अतएव विद्यालयों में इस विषय के अन्तर्गत दोनों प्रकार के कार्य कराना ही अधिक लाभदायक सिद्ध होगा।

तालिका—२७

प्रश्न—नैतिक शिक्षा के अध्ययन से प्राप्त शिक्षायें। (जो छात्र/छात्राओं ने प्राप्त की हैं ?)

कुल छात्र संख्या ६८	सत्य भाषण	अहिंसा	सेवाभाव	परोपकार	सदाचार	कर्तव्य पालन	दया	स्वावलंबन आदि
बालक—२८	√	√	√	√	√	√	√	√
बालिका—४०	√	√	√	√	√	√	√	√

उपर्युक्त तालिका से यह स्पष्ट है कि सम्पूर्ण २८ छात्र एवं ४० बालिकाओं को नैतिक शिक्षा से सत्य भाषण, अहिंसा, सेवाभाव, परोपकार, सदाचार, कर्तव्य पालन, दया, स्वावलम्बन आदि के प्रति आदर की शिक्षायें मिलीं। वास्तव में इन्हीं शिक्षाओं द्वारा ही छात्रों में नैतिकता उत्पन्न होती है। अतः इनका ज्ञान आवश्यक है।

तालिका—२८

प्रश्न—क्या नैतिक शिक्षा के साथ-साथ इससे सम्बन्धित अन्य विषय भी पढ़ाये जाते हैं। (हाँ/नहीं) यदि हाँ तो कौन-कौन से विषय पढ़ाये जाते हैं ?

कुल छात्र संख्या ६८	हाँ	नहीं	मत व्यक्त नहीं किया	पढ़ाये जाने वाले विषयों के नाम: सामाजिक विज्ञान	नागरिक शास्त्र	गाइडिंग	पी०टी०
बालक—२८	×	२६	२	×	×	×	×
बालिका—४०	३१	७	२	√	√	√	√

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि २६ छात्रों के मतानुसार उनके विद्यालयों में इससे सम्बन्धित किसी अन्य विषय का अध्ययन कार्य नहीं कराया जाता है। शेष २ छात्रों ने इस सम्बन्ध में अपना कोई मत नहीं व्यक्त किया है। ४० बालिकाओं में से ३१ छात्राओं के अनुसार उनके विद्यालयों में इस विषय के साथ-साथ सामाजिक विज्ञान, नागरिक-शास्त्र, गाइडिंग, पी० टी० आदि विषयों का भी ज्ञान कराया जाता है। ७ छात्राओं के मतानुसार उनके विद्यालयों में इस विषय के साथ-साथ किसी अन्य विषय का अध्ययन कार्य नहीं कराया जाता। शेष २ छात्राओं ने इस विषय पर कोई मत नहीं व्यक्त किया।

तालिका—२९

प्रश्न—किस विधि से नैतिक शिक्षा का अध्ययन, अध्यापन विद्यालय में लाभप्रद हो सकता है, मत प्रकट कीजिए ?

छात्र संख्या ६८	वातावरण	शिक्षक/शिक्षिकाओं का नैतिक होना	प्रार्थनास्थल पर नैतिक कथन	व्यवहारिक ज्ञान	एकता की भावना
बालक २८	√	√	√	√	√
बालिका ४०	√	√	√	√	√

तालिका २९ के अनुसार विद्यालयों में नैतिक शिक्षा को लाभप्रद बनाने हेतु २८ छात्र एवं ४० छात्राओं ने जो मत प्रकट किये हैं, उनमें एकदम साम्यता है। बालक/बालिकाओं द्वारा दिये गये मत निम्नवत हैं :—

१—वातावरण :—

विद्यार्थियों को नैतिक बनाने में वातावरण का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। अतएव उनके चारों ओर का वातावरण शुद्ध एवं स्वस्थ होना आवश्यक है।

२ · शिक्षक/शिक्षिकाओं का नैतिक होना :—

विद्यार्थीगण अपने बड़ों का अनुकरण करते हैं। अतएव जिन शिक्षक/शिक्षिकाओं के सम्पर्क में वे आते हैं, उनका नैतिक होना बहुत आवश्यक है। शिक्षक/शिक्षिकाओं को एक आदर्श के रूप में अपने को विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिए जिससे उनके अच्छे आचार-विचार का प्रभाव छात्र/छात्राओं पर पड़ सके।

३—प्रार्थना स्थल पर नैतिक कथन :—

प्रार्थना स्थल पर नित्य शिक्षक/शिक्षिकाओं द्वारा नैतिक कथन विद्यालयी वातावरण एवं विद्यार्थियों के मन को स्वस्थ एवं शुद्ध रखता है, अतएव इस कार्य को नित्य नियम से कराना हितकर है।

४—व्यावहारिक ज्ञान :—

विद्यार्थियों को पुस्तकीय ज्ञान की अपेक्षा नैतिक शिक्षा के सम्बन्ध में व्यावहारिक ज्ञान देना उपयुक्त होगा।

५—एकता की भावना :—

एकता में बहुत बल होता है। अतएव शिक्षक/शिक्षिकाओं का यह कर्त्तव्य है कि वे ऐसे कार्य करायें जिससे विद्यार्थियों में आपस में प्रेम एवं स्नेह की भावना उत्पन्न हो।

६—गुरुजनों का आदर :—

बच्चों में आदर सत्कार की भावना का होना आवश्यक है। विद्योर्थियों में नैतिकता के विकास की प्रथम सीढ़ी है। अतएव परिवार, समाज एवं विद्यालय का वातावरण इस प्रकार का सृजित होना चाहिए जिससे विद्यार्थी नैतिक बन सके और उसमें अपने गुरुजनों के प्रति आदर सत्कार की भावना उत्पन्न हो सके। इस सम्बन्ध में भी सभी छात्रों ने अपनी सहमति प्रकट की। इस प्रकार उपर्युक्त कार्यों के माध्यम से विद्यालयों में नैतिक शिक्षा का अध्ययन, अध्यापन लाभकारी हो सकता है।

निष्कर्ष :—

इस शोध अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष निकलते हैं :—

१—नैतिक शिक्षा का शिक्षण कार्य बालक एवं बालिका दोनों प्रकार के विद्यालयों में होता है।

२—इस विषय के शिक्षण कार्य हेतु निर्धारित समय में प्रत्येक विद्यालय में विभिन्नता है। प्रत्येक विद्यालय में अपनी सुविधानुसार इस विषय का शिक्षण कार्य होता है।

३—विद्यार्थियों के नैतिक उत्थान हेतु इस विषय का समावेश पाठ्यक्रम में होना आवश्यक है।

४—स्वस्थ वातावरण का निर्माण चारित्रिक उत्थान हेतु अति आवश्यक है। वातावरण का निर्माण परिवार, विद्यालय एवं समाज सभी के द्वारा होता है। अतएव इनका सम्मेलन आवश्यक है। इस प्रकार समय-समय पर अध्यापक, अभिभावक सहयोग भी अत्यआवश्यक है।

५—छात्रों की अपेक्षा छात्राओं पर इस विषय के अध्ययन का अधिक प्रभाव परिलक्षित हुआ। छात्राओं को इस विषय का अध्ययन अधिक रुचिकर प्रतीत हुआ।

६—नैतिक शिक्षा का शिक्षण कार्य बालक एवं बालिका दोनों प्रकार के विद्यालयों में वहाँ पर कार्यरत शिक्षकों द्वारा ही कराया जाता है। इसके लिये अलग से शिक्षकों की नियुक्ति नहीं की गई है।

७—नैतिक शिक्षा के शिक्षण हेतु शिक्षक/शिक्षिकाओं ने अलग से कोई प्रशिक्षण नहीं प्राप्त किया है।

८—अन्य विषयों की भाँति इस विषय की भी परीक्षा होनी चाहिए। इस प्रकार शिक्षार्थीगण इस विषय को रुचि एवं लगन से पढ़ेंगे।

९—छात्र/छात्राओं पर शिक्षकों एवं माता-पिता के आचार-विचार का प्रभाव पड़ता है। वे उनका अनुकरण करते हैं। अतएव शिक्षकों एवं अभिभावकों सभी का नैतिक होना आवश्यक है।

१०—नैतिक शिक्षा का ज्ञान पुस्तकीय ज्ञान की अपेक्षा व्यावहारिक रूप से देना अधिक प्रभावी होगा।

११—इस विषय का ज्ञान एक विषय के रूप में न देकर अन्य विषयों से सम्बद्ध करके देना अधिक उपयोगी होगा। इससे पाठ्यक्रम विषय बाहुल्य से बच जायेगा और छात्रों को अन्य विषयों के साथ ही साथ इस विषय का ज्ञान हो जायेगा।

सुझाव :

१—नैतिक शिक्षा के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु यह आवश्यक है कि विद्यालयों में इस विषय का शिक्षण कार्य योग्य, अनुभवी एवं इस विषय में प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा कराया जाय। विद्यालय में कार्यरत शिक्षक कार्याधिक्य के कारण इस विषय के शिक्षण कार्य पर ध्यान नहीं देते हैं।

२—विद्यार्थी की सर्वप्रथम पाठशाला उसका अपना परिवार होता है। अतएव बालक के व्यक्तित्व के विकास एवं नैतिकता की भावना को उत्पन्न करने हेतु यह आवश्यक है कि परिवार के सभी सदस्य नैतिक मूल्यों के महत्व को समझें तथा तदनुसार आचरण करें। परिवार के प्रत्येक व्यक्ति को अपने कर्तव्यों के प्रति सजग एवं जागरूक होना आवश्यक है। उनमें बड़ों के प्रति आदर एवं छोटों के प्रति स्नेह की भावना का होना भी आवश्यक है।

३—धर्म एवं नैतिकता एक दूसरे के पूरक हैं, अतएव विद्यार्थियों के चारित्रिक उत्थान हेतु उनमें धर्म के प्रति आस्था उत्पन्न करना आवश्यक है। इस आस्था के कारण वे कोई ऐसे कार्य नहीं करेंगे जिससे समाज में दोष एवं अवरोध उत्पन्न हो।

४—परिवार के पश्चात् बालक विद्यालय में प्रवेश करता है, अतएव विद्यालय के प्रधान एवं सहायक शिक्षक/शिक्षिकाओं का सच्चरित्र एवं कर्तव्यनिष्ठ होना आवश्यक है। उन्हें समदर्शी, सूक्ष्मदर्शी एवं सहनशील होना चाहिए। जहाँ तक संभव हो वे विद्यालय के प्रत्येक छात्र/छात्राओं पर व्यक्तिगत ध्यान देते हुए उनके प्रत्येक कार्यकलाप पर ध्यान दें। इस प्रकार के प्रयत्न एवं प्रयास से विद्यार्थीगण किसी ऐसे कार्य को नहीं करेंगे, जिससे उनका चरित्र दूषित हो।

५—विद्यालय के वातावरण को शुद्ध एवं पवित्र रखने हेतु यह आवश्यक है कि विद्यालय कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व ईश-वन्दना एवं नैतिक प्रवचन कराये जायँ। नैतिक प्रवचन अध्यापक एवं छात्र दोनों के द्वारा कराये जा सकते हैं।

६—विद्यालय की प्रत्येक कक्षा एवं प्रांगण में नैतिकता से ओत-प्रोत श्लोक, दोहे लिखे जायँ तथा महापुरुषों के चित्र लगाये जायँ।

७—विद्यार्थियों के नैतिक मनोबल को सशक्त एवं प्रभावी बनाने हेतु विद्यालय में नित्य पाठ्येतर क्रियाकलाप का आयोजन किया जाना चाहिए। इससे छात्रों में आज्ञाकारिता, कर्तव्य के प्रति निष्ठा, समय का सदुपयोग आदि नैतिक गुणों का विकास होगा।

८—नैतिक शिक्षा यदि शारीरिक शिक्षा, कार्यानुभव तथा समाज-सेवा के माध्यम से दी जाय तो वह अधिक लाभकारी सिद्ध होगी। इससे विद्यार्थी नैतिक शिक्षा के साथ-साथ अन्य उपयोगी विषयों की भी शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे। उदाहरणार्थ, शारीरिक शिक्षा से विद्यार्थी का शरीर स्वस्थ होगा और स्वस्थ शरीर में स्वतः स्वस्थ मन तथा सद्गुणों का आविर्भाव होगा।

९—शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छात्र/छात्राओं को आत्म निर्भर बनाना है। विद्यालयों में इसी दृष्टिकोण के अन्तर्गत आज कार्यानुभव पर विशेष बल दिया जा रहा है। अतएव नैतिक शिक्षा के अन्तर्गत कभी-कभी शिक्षक विद्यार्थियों को साबुन, सर्फ, डलिया, पंखा, दौने, आसन निर्माण आदि का कार्य भी सिखा सकते हैं। ये कार्य भविष्य में छात्र/छात्राओं को स्वावलम्बी बनाने में सहायक हो सकते हैं।

१०—विद्यार्थियों में कर्त्तव्यपालन एवं सेवा की भावना को उत्पन्न करने की सर्वप्रथम कार्य-स्थली विद्यालय ही है अतएव शिक्षक का यह कर्तव्य है कि वह छात्र को एकता का पाठ पढ़ाये। प्रत्येक शिक्षक को यह ध्यान रखना चाहिए कि प्रत्येक छात्र

कक्षा तथा विद्यालय में एक दूसरे से मिलकर, प्रेमपूर्वक रहे और समय पड़ने पर एक दूसरे की सेवा एवं सहायता भी करे। विद्यालय से प्राप्त ये छोटे-छोटे गुण छात्र को भविष्य में उत्तम श्रेणी का समाज-सेवी बना सकते हैं।

११—नैतिक शिक्षा का मूल्यांकन केवल पुस्तकीय ज्ञान पर करना पर्याप्त नहीं है। इसके लिये छात्र/छात्राओं के आचार-विचार एवं व्यवहार का मूल्यांकन करना भी आवश्यक है। यह कार्य विद्यालय के शिक्षकों के माध्यम से भली प्रकार हो सकता है। विद्यालय में छात्र अनेक शिक्षकों के सम्पर्क में आता है, अतएव जिन शिक्षकों के सम्पर्क में वह आता है उन्हीं के द्वारा उसके कार्य एवं व्यवहार के विषय में जानकारी प्राप्त कर उसकी प्रगति पुस्तिका (Progress Report) में उसका अंकन कर देना उचित होगा। विद्यालय में यह कार्य यदि प्रति माह अथवा प्रति दो माह पर क्रिया जाय तो परिणाम लाभकारी सिद्ध होगा। इस कार्य में शिक्षकों का पूर्ण रूप से सहयोग वाँछित होगा जिससे छात्र उनका अनुकरण कर सही मार्ग-दर्शन प्राप्त कर सके।

———

पृच्छा प्रपत्र–१

राजकीय सेण्ट्रल पेडागॉजिकल इन्स्टीट्यूट, इलाहाबाद

विषय :—माध्यमिक विद्यालयों में नैतिक शिक्षा के शिक्षण एवं तत्सम्बन्धी अन्य कार्य कलाप की स्थिति का सर्वेक्षण ।

प्रधान अध्यापक/प्रधान अध्यापिका

.....

निवेदन

महोदय/महोदया,

प्रस्तुत पृच्छा प्रपत्र उपर्युक्त विषय से सम्बन्धित है । हम सूचना एकत्र करने में आपका पूर्ण सहयोग चाहते हैं । आप द्वारा प्राप्त सूचना का प्रयोग केवल शोध कार्य में ही किया जायेगा । अतएव आप जो भी सुझाव एवं सूचना दें, वह निःसंकोच देने का कष्ट करें । कृपया पृच्छा प्रपत्र शीघ्र पूर्ण कर निम्नलिखित पते पर प्रपत्र प्राप्ति के पन्द्रह दिन के अन्दर अवश्य लौटाने की कृपा करें ।

पता :
प्राचार्य,
राजकीय सेण्ट्रल पेडागाजिकल इन्स्टीट्यूट
इलाहाबाद ।

निर्देश

पृच्छा प्रपत्र भरते समय निम्नलिखित निर्देशों पर विशेष ध्यान देने का कष्ट करें :—

१—उत्तर लिखने से पूर्व पृच्छा प्रपत्र को भली प्रकार पढ़ लीजिये।

२—प्रश्नोत्तर इस पृच्छा पर छोड़े गये स्थान पर लिखिये। यदि स्थान अपर्याप्त हो तो संलग्नक पृष्ठ लगा कर प्रश्न संख्या डाल कर सूचना लिखकर पृष्ठ संलग्न कर दीजिये।

३—कोष्ठकों में सही उत्तर के सुझाव पर सही √का चिह्न लगाइये, रिक्त कोष्ठकों में रिक्त स्थानों पर उत्तर लिखिये।

परिचय सूचना

१—प्रधान अध्यापक/प्रधान अध्यापिका का नाम ... ...

२—पद का अनुभव ... ...

३—विद्यालय का नाम ... ...

४—जनपद का नाम ... ...

५—पता ... ...

पृच्छा प्रपत्र

१—क्या आपके विद्यालय में नैतिक शिक्षा का शिक्षण कार्य होता है ? (हाँ/नहीं)

२—यदि होता है तो नवीं तथा दसवीं कक्षा में हर एक को एक सप्ताह में कितने घण्टे आपने इस विषय के शिक्षण हेतु निर्धारित किये हैं ? ... ...
... ...

३—यदि नहीं तो क्यों ? ... ...
... ...

४—क्या आपकी दृष्टि में नैतिक शिक्षा का पाठ्यक्रम ठीक है ? (हाँ/नहीं)

५—यदि नहीं तो सुधार हेतु सुझाव प्रस्तुत करें : ... ...
... ...
... ...

६—क्या नैतिक शिक्षा के अध्ययन से आपको अपने विद्यालय के छात्र/छात्राओं के आचरण एवं व्यवहार में कोई परिवर्तन परिलक्षित होता है ?
(हाँ/नहीं)

७—क्या आपके विद्यालय में नैतिक शिक्षा से सम्बन्धित अन्य कार्य कलाप भी कराये जाते हैं ? (हाँ/नहीं)

८—यदि हाँ तो कौन-कौन से कार्य कराये जाते हैं ?

(१) ... ...
(२) ... ...
(३) ... ...

९—आपके विद्यालय में नैतिक शिक्षा शिक्षण कार्य सामान्य अध्यापकों द्वारा होता है अथवा इसके लिये आपने विशिष्ट रूप से अध्यापकों की नियुक्ति की है।

(१) सामान्य अध्यापक ... ...

(२) विशिष्ट अध्यापक ... ...

१०—नैतिक शिक्षा के शिक्षण एवं मूल्यांकन में कैसे और अधिक सुधार लाया जा सकता है, आप अपना सुझाव संक्षेप में लिखिये :

सुझाव :— ... ...
... ...
... ...
... ...

पृच्छा प्रपत्र २

राजकीय सेन्ट्रल पेडागाजिकल इन्स्टीट्यूट, इलाहाबाद।

विषय: माध्यमिक विद्यालयों में नैतिक शिक्षा के शिक्षण एवं तत्सम्बन्धी अन्य कार्य कलाप की स्थिति का सर्वेक्षण :

सहायक अध्यापक/सहायक अध्यापिका

.....

निवेदन

महोदय/महोदया,

प्रस्तुत पृच्छा प्रपत्र उपर्युक्त विषय से सम्बन्धित है। हम सूचना एकत्र करने में आपका पूर्ण सहयोग चाहते हैं। आप द्वारा सूचना का प्रयोग केवल शोध कार्य में ही किया जायेगा। अतएव आप जो भी सुझाव एवं सूचना दें, वह निःसंकोच देने का कष्ट करें। कृपया पृच्छा प्रपत्र शीघ्र पूर्ण कर निम्नलिखित पते पर प्रपत्र प्राप्ति के पन्द्रह दिन के अन्दर अवश्य लौटाने की कृपा करें।

पता :

प्राचार्य

राजकीय सेण्ट्रल पेडागाजिकल इंस्टीट्यूट,

इलाहाबाद।

निर्देश

पृच्छा प्रपत्र भरते समय निम्नलिखित निर्देशों पर विशेष ध्यान देने का कष्ट करें :

१—उत्तर लिखने से पूर्व प्रपत्र को भली प्रकार पढ़ लीजिये ।

२—प्रश्नोत्तर इस पृच्छा प्रपत्र पर छोड़े गये स्थान पर लिखिए यदि स्थान अपर्याप्त हो तो संलग्नक पृष्ठ लगा प्रश्न संख्या डाँल कर सूचना लिखकर पृष्ठ संलग्न कर दीजिए ।

३—कोष्ठकों में सही उत्तर के सुझाव पर सही √ का चिह्न लगाइये तथा रिक्त कोष्ठकों में रिक्त स्थानों पर उत्तर लिखिए ।

परिचय सूचना

१—सहायक अध्यापक/सहायक अध्यापिका का नाम ... ...

२—पद का अनुभव ... ...

३—विद्यालय का नाम ... ...

४—जनपद का नाम ... ...

५—पता ... ...

पृच्छा प्रपत्र

१—क्या आपके विद्यालय में नैतिक शिक्षा का अध्ययन कराया जाता है ? (हाँ/नहीं)

२—क्या आपको भी नैतिक शिक्षा के अध्यापन का कार्य दिया गया है ? ... ...

३—यदि हाँ तो अध्यापन हेतु आपको प्रति सप्ताह कितने घण्टे प्रदान किये गये हैं ? (एक घण्टा/दो घण्टा/तीन घण्टा)

४—क्या इतना समय इस विषय के अध्यापन हेतु पर्याप्त है ? (हाँ/नहीं)

५—क्या आपने इस विषय के अध्यापन हेतु कोई प्रशिक्षण प्राप्त किया हैं ? (हाँ/नहीं)

६—यदि हाँ तो कौन सा एवं कहाँ से ? संक्षेप में उत्तर लिखिए।

... ...
... ...

७—क्या विद्यार्थी इस विषय को पढ़ने में रुचि रखते हैं ? (हाँ/नहीं)

८—इस विषय के साथ क्या इससे सम्बन्धित किसी अन्य विषय का भी शिक्षण आप विद्यार्थियों को देते हैं ? (हाँ/नहीं)

९—यदि हाँ तो विषय/विषयों का नाम लिखें।

(१) ... ...
(२) ... ...
(३) ... ...

१०—इस विषय के प्रभावी अध्यापन एवं मूल्यांकन हेतु अपने व्यावहारिक एवं ठोस सुझाव संक्षेप में लिखिये।

... ...
... ...
... ...
... ...
... ...

पृच्छा प्रपत्र-३

राजकीय सेण्ट्रल पेडागाजिकल इन्स्टीट्यूट, इलाहाबाद ।

विषय—माध्यमिक विद्यालयों में नैतिक शिक्षा के शिक्षण एवं तत्सम्बन्धी अन्य कार्य कलाप की स्थिति का सर्वेक्षण ।

अभिभाव्रक

.....

निवेदन

महोदय,

प्रस्तुत पृच्छा प्रपत्र उपर्युक्त विषय से सम्बन्धित है । हम सूचना एकत्र करने में आपका पूर्ण सहयोग चाहते हैं । आप द्वारा प्राप्त सूचना का प्रयोग केवल शोध कार्य में ही किया जायेगा । अतएव आप जो भी सुझाव एवं सूचना दें, वह निःसंकोच देने का कष्ट करें । कृपया पृच्छा प्रपत्र शीघ्र पूर्ण कर निम्नलिखित पते पर प्रपत्र प्राप्ति के पन्द्रह दिन के अन्दर अवश्य लौटाने की कृपा करें ।

पता ।

प्राचार्य

राजकीय सेण्ट्रल पेडागाजिकल इन्स्टीट्यूट,

इलाहाबाद ।

निर्देश

पृच्छा प्रपत्र भरते समय निम्नलिखित निर्देशों पर विशेष ध्यान देने का कष्ट करें :—

१—उत्तर लिखने से पूर्व पृच्छा प्रपत्र को भली प्रकार पढ़ लीजिए।

२—प्रश्नोत्तर इस पृच्छा प्रपत्र पर छोड़े गये स्थान पर लिखिए, यदि स्थान अपर्याप्त हो तो संलग्न पृष्ठ लगाकर प्रश्न संख्या डालकर सूचना लिखकर पृष्ठ संलग्न कर दीजिए।

३—कोष्ठकों में सही उत्तर के सुझाव पर सही √ का चिह्न लगाइये। रिक्त कोष्ठकों में रिक्त स्थानों पर उत्तर लिखिये।

परिचय सूचना

१—अभिभावक का नाम ... ...

२—पता ... ...

३—क्षेत्र (शहरी/ग्रामीण) ... ...

पृच्छा प्रपत्र

१—क्या आपकी दृष्टि में नैतिक शिक्षा का समावेश पाठ्यक्रम में होना आवश्यक है ? (हाँ/नहीं)

२—क्या इस विषय के अध्ययन में आपका पाल्य रुचि लेता है ? (हाँ/नहीं)

३—क्या उपर्युक्त विषय के अध्ययन से आपको अपने पाल्य के आचरण एवं व्यवहार में कोई परिवर्तन परिलक्षित होता है ? (हाँ/नहीं)

४—कोई अन्य सुझाव जो नैतिक शिक्षा के विषय में आप देना चाहते हैं ? ... ...

... ...

... ...

... ...

... ...

पृच्छा प्रपत्र ०

राजकीय सेण्ट्रल पेडागाजिकल इन्स्टीट्यूट, इलाहाबाद ।

विषय :—माध्यमिक विद्यालयों में नैतिक शिक्षा के शिक्षण एवं तत्सम्बन्धी अन्य कार्य कलापों की स्थिति का सर्वेक्षण :

छात्र/छात्रायें

निवेदन

प्रस्तुत पृच्छा प्रपत्र उपर्युक्त विषय से सम्बन्धित है। हम सूचना एकत्र करने में आपका पूर्ण सहयोग चाहते हैं। अतएव आप जो भी सुझाव एवं सूचना दें, वह निःसंकोच देने का कष्ट करें। कृपया पृच्छा प्रपत्र को भली प्रकार पूर्ण कर तीन दिन के अन्दर अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य/प्रधानाचार्या को लौटा दें जिससे वे मेरे पास निम्नांकित पते पर भिजवा सकें।

पता :

प्राचार्य

राजकीय सेण्ट्रल पेडागाजिकल इन्स्टीट्यूट

इलाहाबाद ।

निर्देश :

पृच्छा प्रपत्र भरते समय निम्नलिखित निर्देशों पर विशेष ध्यान देने का कष्ट करें :--

१—उत्तर लिखने से पूर्व पृच्छा प्रपत्र को भली प्रकार पढ़ लीजिए।

२—प्रश्नोत्तर इस पृच्छा प्रपत्र पर छोड़े गये स्थान पर लिखिये। यदि स्थान अपर्याप्त हो तो संलग्नक पृष्ठ लगाकर प्रश्न संख्या डालकर सूचना लिखकर पृष्ठ संलग्नक कर दीजिये।

३—कोष्ठकों में सही उत्तर के सुझाव पर सही √ का चिह्न लगाइये। रिक्त कोष्ठकों में रिक्त स्थानों पर उत्तर लिखिये।

परिचय सूचना

१—छात्र/छात्रा का नाम ... ...

२—कक्षा ... ...

३—विद्यालय का नाम ... ...

४—क्षेत्र (शहरी/ग्रामीण) ... ...

पृच्छा प्रपत्र

१—क्या आपको विद्यालय में नैतिक शिक्षा का अध्ययन कराया जाता है ? (हाँ/नहीं)

२—यदि हाँ तो सप्ताह में यह विषय कितने घण्टे पढ़ाया जाता है ?

(१) एक घण्टा ... ...

(२) दो घण्टा ... ...

(३) तीन घण्टा ... ...

(४) नित्य ... ...

३—क्या आपको इस विषय का अध्ययन रुचिकर लगता है ? (हाँ/नहीं)

(१) यदि हाँ, तो क्यों ? ... ...

... ...

(२) यदि, नहीं तो क्यों ? ... ...

... ...

४—क्या इस विषय को पढ़ाने के लिये आपके विद्यालय में विशिष्ट रूप से अध्यापक/अध्यापिकाओं की नियुक्ति की गयी है अथवा सभी अध्यापक इसका शिक्षण कार्य करते हैं ? संक्षेप में उत्तर दीजिए। ... ...

... ...

... ...

५—क्या इस विषय के अन्तर्गत केवल प्रायोगिक कार्य कराया जाता है अथवा लिखित कार्य भी ?

(१) प्रायोगिक कार्य ... ...

(२) लिखित कार्य ... ...

(३) दोनों ... ...

(४) अन्य ... ...

६—नैतिक शिक्षा के अध्ययन से अब तक आपको क्या शिक्षायें मिलीं हैं ? पाँच बातें लिखिये :

(१) ... ...

(२) ... ...

(३) ... ...

(४) ... ...

(५) ... ...

७—क्या नैतिक शिक्षा के साथ साथ आपको इससे सम्बन्धित कोई अन्य विषय भी पढ़ाये जाते हैं ? (हाँ/नहीं)

८—यदि हाँ तो कौन से विषय ? नीचे भाग में लिखें :

(१) ... ...

(२) ... ...

(३) ... ...

(४) ... ...

(५) ... ...

९—किस-किस माध्यम (विधि से) यह नैतिक शिक्षा का अध्ययन तथा अध्यापन लाभकारी हो सकता है ? ... ...

... ...

... ...

NIEPA DC
D04859

National Systems Unit,
...onal Institute of Educational
...ning and Aministration
...Sri Aurbindo Marg, New Delhi-110016
...C. No. 4859
Date 7/9/89